श्री महावीर पूजन

(कविवर वृन्दावनदासजी कृत)

सर्वोदय अहिंसा

सर्व: सर्वत्र नन्दतु

स्थापना (छन्द मत्तगयन्द)

श्रीमत वीर हरैं भव पीर भरैं सुख सीर अनाकुलताई।
केहरि अंक अरीकरदंक नये हरिपंकति मौलि सु आई।।
मैं तुमको इत थापतु हों प्रभु भक्ति समेत हिये हरषाई।
हे करुणाधनधारक देव! इहाँ अब तिष्ठहु शीघ्रहि आई।।

सर्वोदय अहिंसा
सर्वः सर्वत्र नन्दतु

स्थापना (छन्द मत्तगयन्द)

ॐ ह्रीं श्रीवर्धमानजिनेन्द्र!
अत्र अवतर अवतर संवौषट् इत्याह्वानम्।
ॐ ह्रीं श्रीवर्धमानजिनेन्द्र!
अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः इति स्थापनम्।
ॐ ह्रीं श्रीवर्धमानजिनेन्द्र!
अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधिकरणम्।
पुष्पांजलिं क्षिपेत्

सर्वोदय अहिंसा
सर्व: सर्वत्र नन्दतु

(छन्द अष्टपदी)

क्षीरोदधि सम शुचि नीर, कंचनभृंग भरों।
प्रभु वेग हरो भवपीर यातैं धार करों।।
श्री वीर महा अतिवीर सन्मति-नायक हो।
जय वर्धमान गुणधीर सन्मति-दायक हो।।

ॐ ह्रीं श्री महावीरजिनेन्द्राय जन्मजरामृत्युविनाशनाय
जलं निर्वपामीति स्वाहा।

सर्वोदय अहिंसा
सर्वः सर्वत्र नन्दतु

(छन्द अष्टपदी)

मलयागिरि चन्दन सार केसर संग घसों।
प्रभु भव आताप निवार पूजत हिय हुलसों।।
श्री वीर महा अतिवीर सन्मति-नायक हो।
जय वर्धमान गुणधीर सन्मति-दायक हो।।

ॐ ह्रीं श्री महावीरजिनेन्द्राय भवातापविनाशनाय
चन्दनं निर्वपामीति स्वाहा।

सर्वोदय अहिंसा
सर्वः सर्वत्र नन्दतु

(छन्द अष्टपदी)

तन्दुल सित शशिसम शुद्ध लीनों थार भरी।
तसु पुंज धरों अविरुद्ध पावों शिवनगरी॥
श्री वीर महा अतिवीर सन्मति-नायक हो।
जय वर्धमान गुणधीर सन्मति-दायक हो॥

ॐ ह्रीं श्री महावीरजिनेन्द्राय अक्षयपदप्राप्तये
अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा।

सर्वोदय अहिंसा
सर्वः सर्वत्र नन्दतु

(छन्द अष्टपदी)

सुरतरु के सुमन समेत सुमन सुमन प्यारे।
सो मनमथ-भंजन हेत पूजों पद थारे॥
श्री वीर महा अतिवीर सन्मति-नायक हो।
जय वर्धमान गुणधीर सन्मति-दायक हो॥

ॐ ह्रीं श्री महावीरजिनेन्द्राय कामबाणविध्वंसनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

सर्वोदय अहिंसा
सर्व: सर्वत्र नन्दतु

(छन्द अष्टपदी)

रस रज्जत सज्जत सद्य मज्जत थार भरी।
पद जज्जत रज्जत अद्य भज्जत भूख अरी।।
श्री वीर महा अतिवीर सन्मति-नायक हो।
जय वर्धमान गुणधीर सन्मति-दायक हो।।

ॐ ह्रीं श्री महावीरजिनेन्द्राय क्षुधारोगविनाशनाय
नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सर्वोदय अहिंसा
सर्वः सर्वत्र नन्दतु

(छन्द अष्टपदी)

तम खण्डित मण्डित नेह दीपक जोवत हों।
तुम पदतर हे सुखगेह भ्रमतम खोवत हों।।
श्री वीर महा अतिवीर सन्मति-नायक हो।
जय वर्द्धमान गुणधीर सन्मति-दायक हो।।

ॐ ह्रीं श्री महावीरजिनेन्द्राय मोहान्धकारविनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

सर्वोदय अहिंसा
सर्व: सर्वत्र नन्दतु

(छन्द अष्टपदी)

हरिचन्दन अगर कपूर चूर सुगन्ध करा।
तुम पदतर खेवत भूरि आठों कर्म जरा।।
श्री वीर महा अतिवीर सन्मति-नायक हो।
जय वर्धमान गुणधीर सन्मति-दायक हो।।

ॐ ह्रीं श्री महावीरजिनेन्द्राय अष्टकर्मविध्वंसनाय
धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

सर्वोदय अहिंसा
सर्व: सर्वत्र नन्दतु

(छन्द अष्टपदी)

रितुफल कलवर्जित लाय, कंचन थाल भरों।
शिवफल हित हे जिनराय तुम ढिंग भेंट धरों।।
श्री वीर महा अतिवीर सन्मति-नायक हो।
जय वर्धमान गुणधीर सन्मति-दायक हो।।

ॐ ह्रीं श्री महावीरजिनेन्द्राय मोक्षफलप्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा।

सर्वोदय अहिंसा
सर्वः सर्वत्र नन्दतु

(छन्द अष्टपदी)

जलफल वसु सजि हिमथार तन-मन मोद धरों।
गुण गाऊँ भवदधितार पूजत पाप हरों॥
श्री वीर महा अतिवीर सन्मति-नायक हो।
जय वर्धमान गुणधीर सन्मति-दायक हो॥

ॐ ह्रीं श्री महावीरजिनेन्द्राय अनर्घ्यपदप्राप्तये
अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सर्वोदय अहिंसा
सर्वः सर्वत्र नन्दतु

पंचकल्याणक अर्घ्यावलि

(राग टप्पा चाल में)

गर्भकल्याणक

राखो मोहि शरना, श्री वीर महावीर जी।
ले लो मोहि शरना, श्री वीर महावीर जी।।
गरभ साढ़ सित छट्ठ लियो तिथि, त्रिशला उर अघ हरना।
सुर सुरपति तित सेव करी नित, मैं पूजों भव तरना।।

सर्वोदय अहिंसा
सर्वः सर्वत्र नन्दतु

पंचकल्याणक अर्घ्यावलि

(राग टप्पा चाल में)

गर्भकल्याणक

राखो मोहि शरना, श्री वीर महावीर जी।
ले लो मोहि शरना, श्री वीर महावीर जी।।

ॐ ह्रीं आषाढशुक्लषष्ठ्यां गर्भमंगलमण्डिताय
श्री महावीरजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सर्वोदय अहिंसा
सर्व: सर्वत्र नन्दतु

पंचकल्याणक अर्घ्यावलि

(राग टप्पा चाल में)

जन्मकल्याणक

जनम चैत सित तेरस के दिन, कुण्डलपुर कन वरना।
सुरगिर सुर-गुरु पूज रचायो, मैं पूजों भव हरना॥
राखो मोहि शरना, श्री वीर महावीर जी।
ले लो मोहि शरना, श्री वीर महावीर जी॥

ॐ ह्रीं चैत्रशुक्लत्रयोदश्यां जन्ममंगलमंडिताय
श्री महावीरजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सर्वोदय अहिंसा
सर्व: सर्वत्र नन्दतु

पंचकल्याणक अर्घ्यावलि

(राग टप्पा चाल में)

तपकल्याणक

मगसिर असित मनोहर दशमी, ता दिन तप आचरना।
नृपकुमार घर पारन कीनों, मैं पूजों तुम चरना।।
राखो मोहि शरना, श्री वीर महावीर जी।
ले लो मोहि शरना, श्री वीर महावीर जी।।

ॐ ह्रीं मार्गशीर्षकृष्णदशम्यां तपोमंगलमंडिताय
श्री महावीरजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सर्वोदय अहिंसा
सर्व: सर्वत्र नन्दतु

पंचकल्याणक अर्घ्यावलि

(राग टप्पा चाल में)

केवलज्ञानकल्याणक

शुक्लदशें वैशाख दिवस अरि, घाति चतुक छय करना।
केवल लहि भवि भवसर तारे, जजों चरन सुख भरना।।
राखो मोहि शरना, श्री वीर महावीर जी।
ले लो मोहि शरना, श्री वीर महावीर जी।।

ॐ ह्रीं वैशाखशुक्लदशम्यां ज्ञानमंगलमंडिताय
श्री महावीरजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सर्वोदय अहिंसा
सर्व: सर्वत्र नन्दतु

पंचकल्याणक अर्घ्यावलि

(राग टप्पा चाल में)

मोक्षकल्याणक

कार्तिकश्याम अमावस शिवतिय पावापुरतैं वरना।
गनफनिवृन्द जजैं तित बहुविध, मैं पूजों भय हरना।।
राखो मोहि शरना, श्री वीर महावीर जी।
ले लो मोहि शरना, श्री वीर महावीर जी।।

ॐ ह्रीं कार्तिककृष्णामावस्यायां मोक्षमंगलमंडिताय
श्री महावीरजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सर्वोदय अहिंसा
सर्वः सर्वत्र नन्दतु

जयमाला

(हरिगीतिका)

गनधर असनिधर, चक्रधर, हलधर गदाधर वरवदा,
अरु चापधर, विद्यासुधर, तिरसूलधर सेवहिं सदा।
दुखहरन आनन्द भरन तारन-तरन चरन रसाल हैं,
सुकुमाल गुनमनिमाल उन्नत, भाल की जयमाल हैं।।

सर्वोदय अहिंसा
सर्वः सर्वत्र नन्दतु

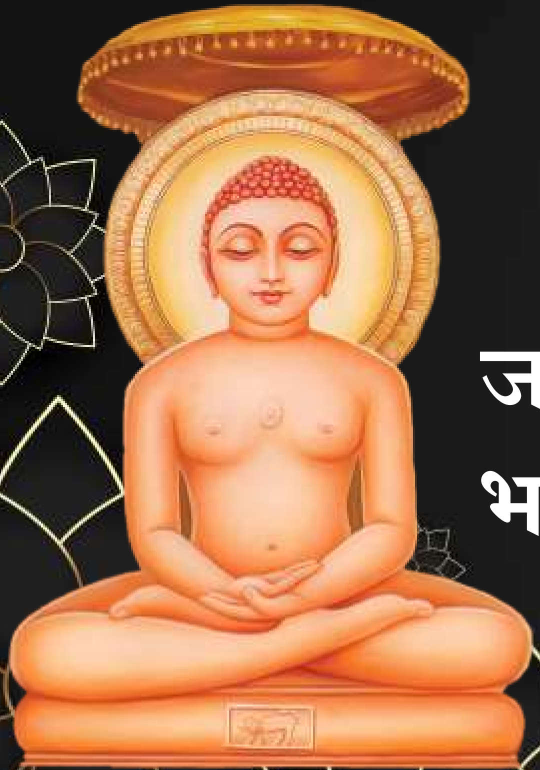

(छन्द घत्तानन्द)

जय त्रिशलानन्दन, हरिकृतवंदन, जगदानन्दन चन्दवरं।
भवतापनिकन्दन, तन कनमन्दन, रहितसपन्दन नयनधरं।।

सर्वोदय अहिंसा
सर्वः सर्वत्र नन्दतु

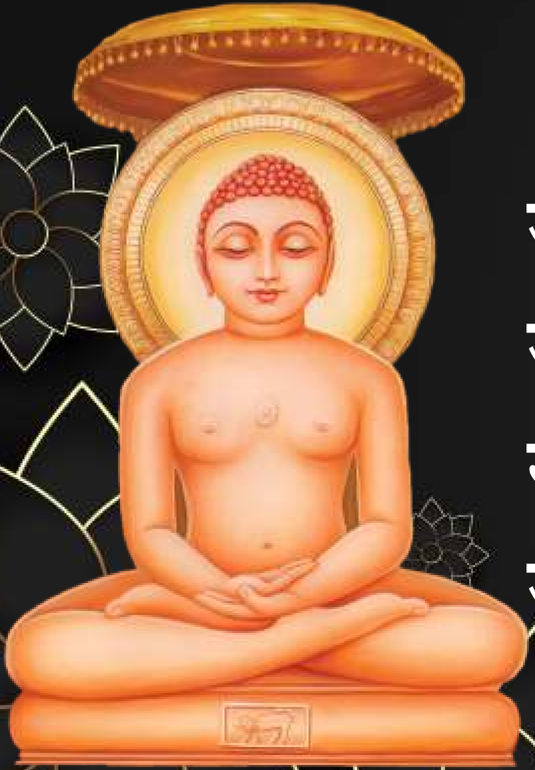

(छन्द त्रोटक)

जय केवलभानु कलासदनं, भवि-कोकविकासन कन्दवनं।
जगजीत महारिपु मोह-हरं, रजज्ञान-दृगांवर चूर करं।।
गर्भादिक मंगलमंडित हो, दुख दारिद को नित खंडित हो।
जगमाहिं तुम्हीं सत पंडित हो, तुम ही भव-भावविहंडित हो।।

सर्वोदय अहिंसा
सर्वः सर्वत्र नन्दतु

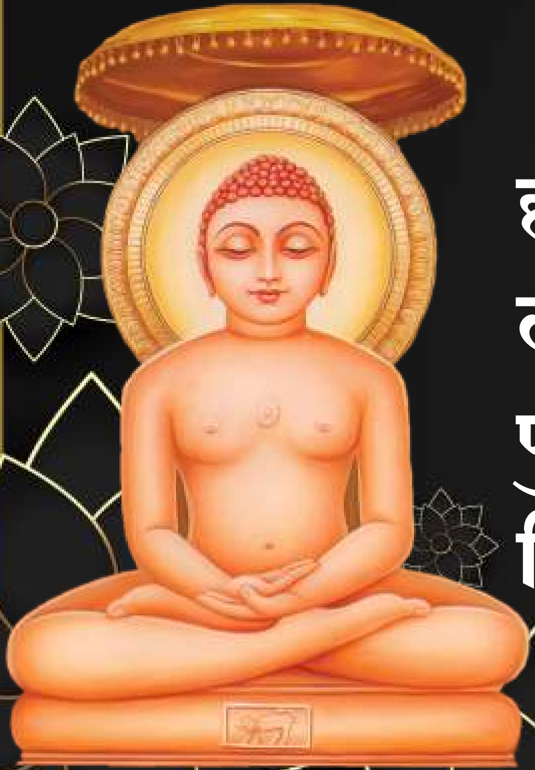

(छन्द त्रोटक)

हरिवंश सरोजन को रवि हो, बलवन्त महन्त तुम्हीं कवि हो।
लहि केवल धर्म-प्रकाश कियो, अबलौं सोई मारग राजति हो।।
पुनि आप तने गुन माहिं सही, सुर मग्न रहैं जितने सब ही।
तिनकी वनिता गुन गावत हैं, लय माननिसों मन भावत हैं।।

सर्वोदय अहिंसा
सर्वः सर्वत्र नन्दतु

(छन्द त्रोटक)

पुनि नाचत रंग उमंग भरी, तुअ भक्ति विषैं पग एम धरी।
झननं झननं झननं झननं, सुर लेत तहाँ तननं तननं।।
घननं घननं घनघंट बजै, दृमदृम दृमदृम मिरदंग सजै।
गगनांगन-गर्भगता सुगता, ततता ततता अतता वितता।।

सर्वोदय अहिंसा
सर्वः सर्वत्र नन्दतु

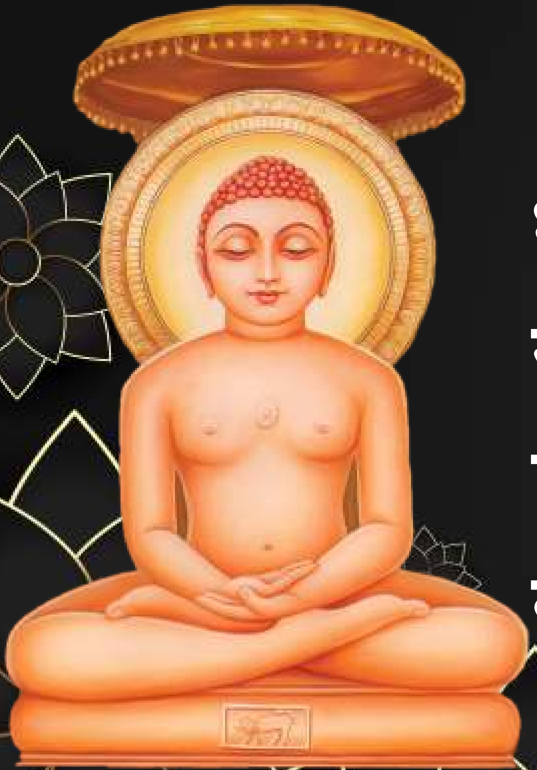

(छन्द त्रोटक)

धृगतां धृगतां गति बाजत है, सुरताल रसाल जु छाजत है।
सननं सननं सननं नभ में, इकरूप अनेक जु धारि भ्रमें।।
किन्नर सुबीन बजावत हैं, तुमरो जस उज्ज्वल गावत हैं।
करताल विषैं करताल धरैं, सुरताल विशाल जु नाद करें।।

सर्वोदय अहिंसा
सर्व: सर्वत्र नन्दतु

(छन्द त्रोटक)

इन आदि अनेक उछाह भरी, सुर भक्ति करैं प्रभुजी तुमरी।
तुम ही जग-जीवन के पितु हो, तुम ही बिन कारनतैं हितु हो॥
तुम ही सब विघ्नविनाशन हो, तुम ही निज आनन्द भासन हो।
तुम ही चितचिंतितदायक हो, जगमाहीं तुम्हीं सब लायक हो॥

सर्वोदय अहिंसा
सर्वः सर्वत्र नन्दतु

(छन्द त्रोटक)

तुमरे पन मंगल माहिं सही, जिय उत्तम पुण्य लियो सब ही।
हमको तुम्हरी सरनागत है, तुमरे गुन में मन पागत है॥
प्रभु मो हिय आप सदा बसिये, जबलों वसुकर्म नहीं नसिये।
तबलों तुम ध्यान हिये वरतों, तबलों श्रुतचिन्तन चित्तरतों।

सर्वोदय अहिंसा
सर्वः सर्वत्र नन्दतु

(छन्द त्रोटक)

तबलों व्रत चारित चाहत हों, तबलों शुभ भाव सुगाहतु हों ।।
तबलों सतसंगति नित्य रहों, तबलों मम संजम चित्त गहों ।।
जबलों नहिं नाश करों अरि को, शिवनारि वरों समता धरि को ।
यह द्यो तबलों हमकों जिनजी, हम जाचतु हैं इतनी सुनजी ।।

सर्वोदय अहिंसा
सर्व: सर्वत्र नन्दतु

(घत्तानन्द)

श्री वीर जिनेशा, नमित सुरेशा, नागनरेशा भगति भरा।
'वृन्दावन' ध्यावै, विघन नशावै, वांछित पावैं शर्म वरा।।

ॐ ह्रीं श्री वर्धमानजिनेन्द्राय जयमालापूर्णार्घ्यं
निर्वपामीति स्वाहा।

सर्वोदय अहिंसा
सर्वः सर्वत्र नन्दतु

(दोहा)

श्री सनमति के जुगल पद, जो पूजें धर प्रीत।
'वृन्दावन' सो चतुर नर, लहैं मुक्ति नवनीत।।

(पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्)

सर्वोदय अहिंसा
सर्वः सर्वत्र नन्दतु